मनुष्य जीवन का आदर्श सच्चे आनंद की प्राप्ति करना है

इंसानी-ज़िन्दगी (मनुष्य जीवन) का आदर्श क्या है? इंसानी ज़िदगी पाना यानी मनुष्य जन्म मिलना एक बड़ी खुशकिस्मती की बात है जिसका खास ध्येय यह है कि परमात्मा का अनुभव करें और दुनियावी प्रपंच से छुटकारा पाएं. अगर यह कीमती ज़िंदगी इस ध्येय की पूर्ती के लिए न लगाई गयी तो जानवर और इंसान की ज़िंदगी में कोई फर्क नहीं है. अगर हम सच्चे भक्त बन जाएँ तो हम कर्मों के जंजाल से छूट जायँ और इन्द्रियों के जाल से हमेशा-हमेशा का छुटकारा मिल सकता है.

जब तक हम दुनियावी बातों के बारे में सोचते रहते हैं और ख्वाहिशात उठाते रहते हैं हम कभी खुश नहीं रह सकते. जब हमारा मन और बुद्धि ईश्वर की तरफ़ लग जाते हैं तभी हमें सच्ची ख़ुशी हासिल होती है. परमात्मा की तरफ़ तवज्जह (ध्यान) लगाने और हमेशा-हमेशा को इस प्रपंच से छूटने और सच्ची ख़ुशी हासिल करने का साधन यही है कि हम उससे मिलने के लिए अपनी ख्वाहिश को जगाएं और उसे हर समय याद रखें. ईश्वर हर समय और हमेशा हमारे दिल में रहता है लेकिन उसके दर्शन तभी हो सकते हैं जब हम अपने मन को वासनाओं से साफ़ कर लें. हमें उस तक पहुँचने के लिए ख्वाहिश उठानी चाहिए. उसको हमेशा याद रखना चाहिए. उस तक पहुंचने का जतन करना चाहिए. उसी की बाबत सोचना चाहिए और आख़िर में पूर्ण रूप से अपने आप को उसके सुपुर्द कर देना चाहिए.

जब हम पूरे तौर से अपने आपको परमात्मा को समर्पण कर देते हैं तब हमें अपने अंतर में उसके दर्शन होते हैं और हमारी खुदी, जो हमारे और उसके बीच में पर्दा है, और जिसकी वजह से उसका अपने घट में रहते हुए भी हम दर्शन नहीं कर सकते, हमेशा के लिए जाता रहता है. ऐसा आदमी ईश्वर का ही रूप है. उसको सिर्फ शांति और आनंद ही नहीं मिलता, बल्कि साथ ही साथ, वह ईश्वर के कामों का ज़रिया बन जाता है और इससे दुनियाँ का बड़ा उपकार होता है. वह पृथ्वी पर जिस्म में ईश्वर रूप होकर रहता है और उसकी पूजा भी ईश्वर के समान ही होती है.

ईश्वर अपने भक्तों की पूजा करता है. गीता में लिखा है कि वह भक्त जिसको ज्ञान हो गया है या जिसने मोक्ष हासिल कर ली है, सचमुच ईश्वर है . भगवत गीता में श्रीकृष्ण भगवान ने जो कि स्वयं ईश्वर के अवतार थे, दुनियाँ को दिखलाया है कि वह किस तरह उन भक्तों तक पहुंचे, उनकी कितनी इज़्ज़त की है. उनका एक दीन भक्त सुदामा उनके दर्शन को द्वारका गया. जैसे ही उन्होंने उसको देखा, बड़े प्रेम से उनका स्वागत किया, उनको अपने सिंहासन पर बैठाया और उनकी पूजा की.

एक बार नारदजी द्वारका में श्रीकृष्ण भगवान के दर्शन करने को गए. महलों के दरवाज़े पर उन्हें रोक दिया गया. उनसे कहा गया कि इस समय भगवान किसी से नहीं मिल सकते क्योकि हमेशा की तरह वह इस समय पूजा कर रहे हैं. नारद को यह सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि श्रीकृष्ण भगवान, जो स्वयं ईश्वर के रूप

हैं, किसकी पूजा कर रहे हैं. इस बात को जानने के लिए वह आहिस्ता से अन्दर गए और झरोकें में से देखने लगे जहाँ श्रीकृष्ण भगवान बैठे थे. उन्होंने देखा कि कृष्ण भगवान के सामने अंबरीष, द्रोपदी, बाल्मीक, नारद आदि बहुत से भक्तों की मूर्तियां रखी हैं. नारद अन्दर गए और श्रीकृष्ण भगवान से पूंछा कि वे यह सब क्या कर रहे हैं. श्री-भगवान ने उत्तर दिया- मैं अपने भगवान् की पूजा कर रहा हूँ और मेरे ईश्वर के स्वरूपों की मूर्तियां मेरे सामने रखी हैं.

सचमुच जब एक भक्त पूर्ण रूप से ईश्वर में समर्पण करके ईश्वर से मिलकर एक हो जाता है तो वह ईश्वर ही हो जाता है. दुनिया के अन्दर आदमी बहरी चीज़ों को हासिल करते हैं . लेकिन ऐसे भक्तों ने पूर्ण रूप से अपने मन को जीत लिया है और अपनी खुदी को ईश्वर में मिला दिया है और अपने अन्दर ईश्वर को पा लिया है. बाइबिल में लिखा है कि हज़रत ईसा मसीह ने एक जगह अपने शिष्य के पाँव धोये और उसकी पूजा की.

इन सभी ऊपर की बातों से पूर्ण रूप से स्पष्ट है कि ईश्वर के भक्त सचमुच में ईश्वर के अवतार होते हैं. शिव के भक्त इंसानी शक्ल में खुद शिव हैं और इसी प्रकार से विष्णु के भक्त इंसानी शक्ल में विष्णु हैं. बुद्ध भगवान् जिन्होंने अपने मन को काबू में किया और अपने दिल की गहराई में गए, उन्होंने अन्त में निर्वाण हासिल किया. ऐसे ही भगवान महावीर स्वामी या ख़ुदा के बन्दे हज़रत मौहम्मद साहब - जिन्हें आज भी लाखों -करोड़ों लोग पूजते हैं. इसी तरह की आला-अज़ीम शख्सियतों (श्रेष्ठ उच्च-कोटि के महामानवों) में हज़रत ईसा मसीह और हज़रत मूसा थे, जो ईश्वरीय प्रेम के नमूने थे. उनको भी करोड़ों आदमी पूजते हैं. इस पूजने का कारण यही है कि ईश्वरीय शक्ति, शान्ति, आनन्द इन महापुरुषों के दिल में ज़ाहिर हुए और उनके ज़रिये दुनियाँ को मिले.

ऐसी महान आत्माएं जगत के लिए एक बड़ी बरकत (वरदान) की चीज़ है. उन्होंने अपनी इस ज़िन्दगी को दूसरों के लिए ईश्वर प्राप्ति का एक साधन बना दिया जिसका सहारा लेकर मनुष्य उस महान शक्ति ईश्वर तक पहुँच सकता है. इसलिए इस इंसानी ज़िन्दगी का लक्ष्य उस ईश्वर को, जो इसके अन्दर रहता है, उसको ज़ाहिर (प्रकट) करना है. हमको चाहिए कि हम आहिस्ता-आहिस्ता दुनियाँ की ज़िन्दगी से अपने मुँह को अन्दर की तरफ मोड़ें और उस ईश्वर को अपने ही अन्दर पायें, तभी हमको सच्ची ख़ुशी हासिल हो सकती है - और यही इंसानी ज़िन्दगी का आदर्श होने चाहिए.

गुरुदेव तुम्हारा कल्याण करें .

राम सन्देश : दिसंबर, १९९४